

17-भाव सम्वेदनाओं की गंगोत्री

अध्याय 1: वेदव्यास की अन्तर्व्यथा

प्रश्न 1: मनीषी वेदव्यास सरस्वती नदी के तट पर क्यों व्यथित बैठे थे?

उत्तर: वेदव्यास इसलिए व्यथित थे क्योंकि वे व्यक्ति और समाज की दयनीय दशा देख रहे थे। उन्हें लगता था कि मनुष्य अहंकार, अविश्वास और स्वार्थ के कारण पशु से भी बदतर होता जा रहा है। परिवारों में प्रेम की जगह स्वार्थ ने ले ली थी और समाज में गिरे हुए को कुचलने की प्रवृत्ति बढ़ गई थी। अपनी आँखों के सामने मानवता की ऐसी दुर्गति देखकर वे पीड़ा में थे।

प्रश्न 2: वेदव्यास के अनुसार, मनुष्य और पशु में क्या अंतर रह गया था?

उत्तर: वेदव्यास के अनुसार, मनुष्य और पशु में आचार-विचार की दृष्टि से कोई भेद नहीं रह गया था, केवल उनके आकार-प्रकार का अंतर ही शेष था। मनुष्य देवता बनने की क्षमता रखने के बावजूद अपने कर्मों से पशु से भी नीचे गिरता जा रहा था, जो ऋषि के लिए बहुत पीड़ादायक था।

प्रश्न 3: वेदव्यास ने मानवता की भलाई के लिए क्या-क्या प्रयास किए और उनके क्या परिणाम हुए?

उत्तर: वेदव्यास ने मानवता की भलाई के लिए कई प्रयास किए। उन्होंने वैदिक मंत्रों का वर्गीकरण किया, पुराणों और महाभारत की रचना की, तथा ब्रह्मसूत्र जैसे ग्रंथ लिखे। लेकिन उनके प्रयास पूरी तरह सफल नहीं हुए। लोग कर्मकाण्डों में उलझ गए, पुराण जीविका का साधन बन गए और ब्रह्मसूत्र पर केवल शास्त्रार्थ होने लगे, जिससे समाज में कोई वास्तविक सुधार नहीं आया।

प्रश्न 4: अपने प्रयासों के असफल होने पर भी वेदव्यास ने क्या निश्चय किया?

उत्तर: अपने प्रयासों की आंशिक असफलता के बावजूद वेदव्यास ने हार नहीं मानी। उन्होंने कहा कि कर्तव्यनिष्ठा ही मनुष्यता है और एक मनीषी होने के नाते वे अपनी अंतिम साँस तक मानवता को राह दिखाने का प्रयास करते रहेंगे। इसी निश्चय के कारण वे निरंतर समाधान की खोज में लगे रहे।

अध्याय 2: देवर्षि का सत्परामर्श

प्रश्न 1: देवर्षि नारद ने वेदव्यास की समस्या का क्या समाधान सुझाया?

उत्तर: देवर्षि नारद ने वेदव्यास की समस्या का एकमात्र समाधान 'भाव-सम्वेदनाओं का जागरण' बताया। उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति के अंदर उन्नत भाव और दिव्य सम्वेदनाएँ जागृत होती हैं, तो उसकी आत्मा जाग जाती है। यही जागरण मनुष्य की बुद्धि और मन को गलत रास्ते पर भटकने से रोककर सही मार्ग पर लगा सकता है।

प्रश्न 2: देवर्षि के अनुसार भाव-सम्वेदनाएँ कोमल और कठोर दोनों कैसे हैं?

उत्तर: देवर्षि के अनुसार, भाव-सम्वेदनाएँ दोहरी प्रकृति की होती हैं। ये अच्छी प्रवृत्तियों के लिए फूल की तरह कोमल होती हैं और उनमें सुगंध भरती हैं। वहीं, बुरी प्रवृत्तियों और अहंकार के लिए ये वज्र की तरह कठोर होती हैं और एक ही प्रहार में उन्हें नष्ट कर देती हैं।

प्रश्न 3: भावों के जागरण के लिए देवर्षि ने क्या सावधानी बरतने को कहा?

उत्तर: देवर्षि ने सावधानी बरतने की सलाह देते हुए कहा कि भाव-सम्वेदनाओं का आह्वान केवल लोक-कल्याण के लक्ष्यों के लिए ही किया जाना चाहिए। इन भावों के अमृत को अच्छे विचारों के पात्र में ही सहेजना

चाहिए और विवेक की छत्री से छानना चाहिए, ताकि उनके सुखद परिणाम ही सामने आए।

प्रश्न 4: देवर्षि नारद ने वेदव्यास और उनके शिष्यों को युग-परिवर्तन के लिए क्या करने को कहा?

उत्तर: देवर्षि ने कहा कि इस महान कार्य को पूरा करने के लिए केवल वेदव्यास का प्रयास काफी नहीं होगा, बल्कि उनके शिष्य-समूह को भी जुटना पड़ेगा। शिष्यों को यह कार्य युग-धर्म मानकर, वेदव्यास द्वारा रचित भाव-संजीवनी को जन-जन तक पहुँचाना होगा, तभी वास्तविक सफलता संभव होगी।

अध्याय 3: अन्तर्दृष्टि जागी—चैतन्य हो गए

प्रश्न 1: सन्त ईश्वरपुरी ने निमाई (विश्वम्भर मिश्र) से मिलकर क्या कहा और क्यों?

उत्तर: सन्त ईश्वरपुरी ने निमाई से कहा कि वे केवल बुद्धि का कौशल दिखा रहे हैं, शास्त्रों का सच्चा अर्थ नहीं जानते। उन्होंने निमाई को फटकारा क्योंकि समाज अत्याचारों से त्रस्त था और मनुष्य अपना आत्मविश्वास खो चुका था, ऐसे में निमाई अपनी विद्वता केवल शास्त्रार्थ में बर्बाद कर रहे थे। उनका उद्देश्य निमाई की प्रतिभा को भाव-श्रद्धा से जोड़ना था।

प्रश्न 2: सन्त ईश्वरपुरी के अनुसार समाज की समस्याओं का मूल कारण और समाधान क्या था?

उत्तर: सन्त के अनुसार, समाज की समस्याओं का मूल कारण मनुष्य का भाव-चेतना खोकर मुर्दे जैसा निष्ठुर और अकर्मण्य हो जाना था। इसका समाधान था 'भाव-श्रद्धा' को जगाकर लोगों में मनुष्यता वापस लाना। उन्होंने कहा कि भाव-चेतना के बिना जीवित मनुष्य भी एक लाश के समान है, जो केवल सड़ता है और वातावरण को दूषित करता है।

प्रश्न 3: निमाई 'चैतन्य' कैसे बने और उन्होंने समाज के लिए क्या किया?

उत्तर: सन्त ईश्वरपुरी के तर्कों से निमाई की अन्तर्दृष्टि जाग गई और उन्होंने स्वीकार किया कि अब तक वे मुर्दा थे और अब 'चैतन्य' हो गए हैं। इसके बाद उन्होंने अपना जीवन बदल दिया। उन्होंने उपेक्षित कोढ़ी की सेवा की और मुर्दा हो चुके समाज में प्राण फूँकने के लिए संकीर्तन-मंडल गठित किए। उन्होंने भाव-श्रद्धा के प्रकाश से लोगों में खोई हुई मनुष्यता को जगाने का कार्य किया।

अध्याय 4: जगी सम्वेदना ने नारी-चेतना को झकझोरा

प्रश्न 1: रानी होने के बावजूद मीरा क्यों बेचैन रहती थीं?

उत्तर: चित्तौड़ की रानी मीरा के पास वैभव और सम्मान सब कुछ था, लेकिन उन्हें मानव-हित में कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं थी। राज-परिवार की झूठी मर्यादाएँ और परम्पराएँ उन्हें नारी-चेतना को जगाने और जनक्रांति का बीज बोने से रोकती थीं। इसी बंधन और अंदर की तड़प के कारण वे महलों में रहकर भी बेचैन थीं।

प्रश्न 2: मीरा ने नारी को पुरुषों से बेहतर क्यों बताया?

उत्तर: जब एक महिला ने मीरा से पूछा कि वे पुरुषों का काम क्यों कर रही हैं, तो मीरा ने जवाब दिया कि यह वास्तव में महिलाओं का काम है। उनके अनुसार, भाव-श्रद्धा की गहराई और परहित के लिए स्वार्थ त्यागने की प्रवृत्ति नारी की विशेषता है। जैसे वह कष्ट सहकर परिवार को संगठित रखती है, उसी तरह उसे इस भाव को और व्यापक बनाना चाहिए।

प्रश्न 3: मीरा के जीवन का मुख्य संदेश क्या था?

उत्तर: मीरा के जीवन का मुख्य संदेश था कि सफलता से अधिक महत्वपूर्ण है पीड़ा और पतन के बंधनों को तोड़ने के लिए बेचैन होना और उस दिशा में कदम बढ़ाना। उन्होंने अपने जीवन से यह दिखाया कि एक जीवित मनुष्य वह है जो दूसरों के बुझे जीवन में ज्ञान और सम्बेदना का प्रकाश फैलाता है।

अध्याय 5: सक्रिय समर्पण कैसा हो?

प्रश्न 1: नवयुवती आंडाल ने विवाह करने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर: जब आंडाल के परिवार वालों ने घर बसाने के लिए विवाह करने को कहा, तो उन्होंने तर्क दिया कि जब भगवान का घर (समाज) ही टूट-फूट रहा है, तो नया घर बसाने की सोचना मूर्खता है। उन्होंने कहा कि यदि घर बसाना ही है, तो क्यों न पहले से उजड़ रहे समाज को ही ठीक से बसाया जाए? उन्होंने भगवान को ही अपना पति मान लिया।

प्रश्न 2: आंडाल के अनुसार सच्ची भक्ति और समर्पण क्या है?

उत्तर: आंडाल ने भक्ति की नई व्याख्या की। उनके अनुसार, सच्ची भक्ति निष्क्रिय पूजा-पाठ नहीं, बल्कि सक्रिय समर्पण है। इसका अर्थ है कि जब व्यक्ति की भावनाएँ, सोच और सभी कार्य विश्व-उद्यान (संसार) को सुंदर बनाने के लिए मचल उठें, तभी समर्पण की क्रिया शुरू होती है। उन्होंने कहा कि भक्त वही है जिसके लिए हर व्यक्ति का दर्द अपना दर्द हो।

अध्याय 6: संकल्प जागा तो निष्ठुर भी बदला

प्रश्न 1: कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक 'चण्ड-अशोक' से 'अशोक महान' में कैसे परिवर्तित हुए?

उत्तर: कलिंग युद्ध में हुए भीषण नरसंहार ने अशोक को अंदर से झकझोर दिया। एक वृद्ध युद्धबंदी ने उनकी वीरता को 'क्रूरता' कहा, क्योंकि वे लाशों के ढेर पर विजय का जश्न मना रहे थे। इस घटना ने उनके मन में बेचैनी पैदा कर दी और उन्होंने क्रूरता को छोड़कर सच्ची वीरता के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

प्रश्न 2: आचार्य उपगुप्त ने अशोक को वीरता और क्रूरता में क्या अंतर बताया?

उत्तर: आचार्य उपगुप्त ने अशोक को समझाया कि संकट में फंसे लोगों को बचाने और सुख पहुँचाने के लिए अपने जीवन का मोह त्याग देना 'वीरता' है। इसके विपरीत, बसी हुई बस्तियों को उजाड़ना, शोषण करना और दूसरों को पीड़ा देना 'क्रूरता' है। इस व्याख्या ने अशोक के संकल्प को और दृढ़ कर दिया।

प्रश्न 3: अशोक ने भावों के जागरण के बाद अपने जीवन में क्या बदलाव किए?

उत्तर: अशोक ने अपनी महत्वाकांक्षाओं को त्यागकर शांति और सद्भाव की भावधारा बहाने का काम शुरू किया। उन्होंने अपना व्यक्तिगत जीवन भी बदल लिया और एक सामान्य नागरिक की तरह जीने लगे। उन्होंने अपनी संतान, महेंद्र और संघमित्रा को भी जन-चेतना जगाने के कार्य में समर्पित कर दिया, जो उनकी विरासत का सच्चा रूप था।

अध्याय 7: सम्बेदना चैन से नहीं बैठने देती

प्रश्न 1: जीसस (ईसा) के पास कोई सांसारिक साधन न होते हुए भी वे महान् कैसे बने?

उत्तर: जीसस के पास सांसारिक साधन नहीं थे, लेकिन उनके पास करुणा की आंतरिक सम्पदा थी। इसी करुणा के कारण वे स्वार्थ-रहित और त्यागी बने। उन्होंने अपनी मर्मस्पर्शी वाणी और सम्बेदनाओं से भरे हृदय से लोगों के दुःखों को दूर किया और समाज के मुर्दा हो चुके लोगों में नए प्राण फूँके, जिससे वे महान् बने।

प्रश्न 2: जीसस ने एक धनी युवक को स्वर्ग का राज्य पाने का क्या उपाय बताया?

उत्तर: जब एक धनी युवक ने स्वर्ग का राज्य पाने का उपाय पूछा, तो जीसस ने कहा कि वह अपनी सारी संपत्ति बेचकर प्राप्त धन को गरीबों और जरूरतमंदों की पीड़ा दूर करने में लगा दे। जब युवक संपत्ति का मोह नहीं त्याग सका, तो जीसस ने समझाया कि धन का लालची व्यक्ति स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

प्रश्न 3: जीसस ने जेकस जैसे क्रूर व्यक्ति को कैसे बदल दिया?

उत्तर: जीसस स्वयं क्रूर जेकस के पास गए और उसे हृदय से लगा लिया। उन्होंने उसे उसकी क्रूरता के परिणामों का इतना कारुणिक वर्णन सुनाया कि जेकस की निष्ठुरता पिघल गई। उन्होंने जेकस के अंदर सोई हुई मानवीय सम्बेदना को जगाया, जिससे उसने अपनी सारी कमाई गरीबों की सेवा में अर्पित करने का संकल्प लिया।

अध्याय 8: जब अन्तः में लौ जली तो

प्रश्न 1: गाँधीजी 'कर्मवीर' से 'महात्मा' कैसे बने?

उत्तर: दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान गाँधीजी ने एक युवती को फटे-पुराने कपड़ों में देखा। उसकी गरीबी और विवशता देखकर गाँधीजी की सम्बेदना जाग उठी और उन्हें शर्मिंदगी महसूस हुई। उसी क्षण उन्होंने आजीवन आधी धोती पहनने का संकल्प लिया। यह केवल पोशाक का बदलाव नहीं, बल्कि उनके अंतरंग में हुआ एक गहरा परिवर्तन था, जिसने उन्हें 'महात्मा' बना दिया।

प्रश्न 2: गाँधीजी ने सच्ची महानता और झूठे बड़प्पन में क्या अंतर बताया?

उत्तर: गाँधीजी ने समझाया कि सूट-बूट पहनने वाले बड़े लोग नहीं होते। बड़ा या महान् वह व्यक्ति है जिसका मन आम लोगों की समस्याओं से व्याकुल रहता है, जिसकी बुद्धि उन समस्याओं का समाधान खोजती है और जिसका शरीर निरंतर सेवा में लगा रहता है। सच्ची महानता जन-सेवा में है, जबकि झूठा बड़प्पन केवल दिखावे में है।

प्रश्न 3: भाव-चेतना के जागरण से उत्पन्न बेचैनी एक रोगी की बेचैनी से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर: एक रोगी की बेचैनी उसे असहाय बनाती है, वह केवल बिस्तर पर पड़ा कराहता है। इसके विपरीत, भाव-चेतना के जागरण से उत्पन्न बेचैनी व्यक्ति को सक्रिय होने के लिए विवश करती है। जैसा कि महात्मा गाँधी के जीवन में हुआ, यह सक्रियता व्यक्ति को एक साथ अनेक लोक-कल्याण के कार्य करने की ऊर्जा देती है।

अध्याय 9: सम्बेदना की दिव्य दृष्टि

प्रश्न 1: इंजीनियर अमृत लाल ठक्कर 'ठक्कर बापा' कैसे बने?

उत्तर: जब एक हरिजन कर्मचारी ने ठक्कर जी से कहा कि वे उनकी गरीबी को नहीं समझ सकते, तो यह बात उनके मर्म को भेद गई। उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ और उनकी सम्बेदना जाग उठी। उन्होंने अपनी नौकरी, कोट-पैट और आलीशान घर छोड़कर हरिजनों की बस्ती में एक टूटी झोपड़ी में रहना शुरू कर दिया और उनकी सेवा में जुट गए, जिससे वे 'ठक्कर बापा' कहलाए।

प्रश्न 2: ठक्कर बापा ने जयपुर में ऐसा क्या देखा जो किसी और को नहीं दिखा?

उत्तर: जयपुर, जिसे भारत का पेरिस कहा जाता है, उसके वैभव को सब देखते थे, लेकिन ठक्कर बापा को वहाँ के भंगियों की नारकीय दशा दिखाई दी। यह उनकी दिव्य दृष्टि थी, जो सम्वेदना से उत्पन्न होती है। इसी दृष्टि के कारण वे उन दीन-हीनों की पीड़ा देख पाए और उनकी दशा सुधारने के लिए जुट गए।

प्रश्न 3: बापा के अनुसार उनका 'नन्दकुमार' (भगवान) कहाँ रहता था?

उत्तर: जब वियोगी हरि ने बापा से पूछा कि क्या उन्होंने कभी नन्दकुमार को देखा है, तो बापा ने भाव-विभोर होकर उत्तर दिया कि उन्होंने आदिवासियों और हरिजनों के गोकुल में कई रूपों में नन्दकुमार का दर्शन किया है। उनका हरि दीन-दलितों और पीड़ितों की कुटियों में बसता था, जिनके साथ वे पूरी तरह तद्रूप हो गए थे।